(1)

Lecture Series NO:- 36

Online class.
Date- 2/2/2022.
Day-
Time- 10:50 to 11:40 AM

Topic,

(1:) Indian Metaphysics;

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy,
B.A Part - II
Paper - III (H.)
A.N.D. College Shahpur Patory.
Samastipur.

Ans:⇒ Indian Metaphysics (भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन में अपने-अपने ढंग में दार्शनिकों ने अपना मत व्यक्त किया है।

भारतीय दर्शन का कहना है, आखिर ज्ञान मनुष्य में किस ढंग से है, तो जैसे शंकराचार्य रामानुज जैसे दार्शनिक ने अपना मत व्यक्त किया इन्होंने कहा ज्ञान तो दो प्रकार से होता है।

शंकर के मतानुसार आत्मा का शरीर के साथ आसक्त हो जाना ही बन्धन है। आत्मा स्वभावतः नित्य शुद्ध, चैतन्य, मुक्त और अविनाशी है, परन्तु अज्ञान से वशीभूत होकर वह बन्धनग्रस्त हो जाता है। आत्मा शरीर के पृथकत्व

P.T.O.

के ज्ञान के अभाव में शरीर के सुख-दु:ख को निजी सुख-दु:ख समझने लगती है। यही बन्धन (Bondage) है। अविद्या के नाश होने के साथ ही साथ जीव के पूर्व संचित कार्यों का अन्त हो जाता है। और इस प्रकार वह (आत्मा) भावी दु:खों से छुटकारा पा जाता है। अविद्या का अन्त ज्ञान से ही सम्भव है। मोक्ष को अपनाने के लिए ज्ञान परमावश्यक है।

Dr. C.D Sharma के अनुसार:→

"Liberation therefore means removal of ignorace Knowledge"

जैसा कि काल्पनिक साँप अविद्या के दूर हो जाने पर रस्सी के वास्तविक रूप में आ जाता है। मीमांसा, मोक्ष की प्राप्ति कर्म के द्वारा सम्भव मानता है। परन्तु शंकर के अनुसार कर्म और भक्ति ज्ञान के प्राप्ति में भले ही आवश्यक हो सकते हैं।

END.